अमाप्य गतिविधियों का महत्त्व

❑ डेविड ऑसबरॉ

बच्चे के शैक्षिक आकलन की पद्धतियों ने इधर काफी प्रगति की है किन्तु कई सृजनशील गतिविधियां अभी भी इनकी परिधि से बाहर हैं । यह इन गतिविधयों की संश्लिष्टता है जो मूल्यांकन के लिए आज भी चुनौती बनी है । जबकि प्रत्येक शिक्षा आयोग इनका समर्थन करता है । कोठारी आयोग (1986) की रिपोर्ट में कहा गया है : ''खोज और आविष्कार को महत्त्वपूर्ण मानने वाले युग में सृजनात्मक अभिव्यक्ति विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण हो जाती है । शिक्षा में कला की अवहेलना से शिक्षण-प्रक्रिया दरिद्र हो जाती है ।''

काम के कई पहलू बहुधा शिक्षाक्रम से बाहर छोड़ दिए जाते हैं । इस लेख में उन्हें शिक्षाक्रम में शामिल करने के लिए कुछ आधारों को स्पष्ट करने का अति-संक्षेप में प्रयास किया गया है। काम के इन पहलुओं को कई बार सीखने के अमाप्य (नॉन-मेजरेबल) क्षेत्र कहा जाता है, क्योंकि इनका मूल्यांकन शिक्षाक्रम के सामान्य विषयों की तुलना में अधिक मुश्किल है । इस संक्षिप्त लेख में तो इन विषयों पर सविस्तार विवेचना संभव नहीं होगी, पर आगे आने वाले लेखों में इसके लिए प्रयास होंगे ।

इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण विषय हैं : कला, हस्तशिल्प, नृत्य, नाट्य, संगीत और गायन, बागवानी तथा पर्यावरण का अध्ययन । तीन अन्य विषय, जो उपरोक्त से बहुत नजदीकी संबंध रखते हैं, वे हैं: निर्णय लेना, विमर्श तथा नैतिकता ।

उपरोक्त में से कई या सभी विषय सामान्यतया सुविधापूर्वक शिक्षाक्रम से बाहर रह जाते हैं । यदि किसी कारणवश इन्हें शिक्षाक्रम में लिख भी दिया जाता है तो शिक्षक इनकी कोई परवाह नहीं करते, अत: विद्यालय की रोजमर्रा की गतिविधियों का हिस्सा ये कभी नहीं बन पाते ।

इस प्रकार की गतिविधियों को प्राय: छोड क्यों दिया जाता है ?

पहली बात तो यह कि बाल शिक्षामें इन गतिविधियों के महत्व की कोई वास्तविक समझ ही नहीं है । अधिक से अधिक इनको हॉबीज के रूप में देखा जाता है । ऐसी गतिविधियों के रूप में कि जो बच्चों को या तो व्यस्त रखने के लिए या उन्हें सामान्य विद्यालयी विषयों के गंभीर अध्ययन से बदलाव का मौका देने के लिए करवाई जा सकें ।

अगली बात यह कि ये सामान्यतया शिक्षाक्रम में नही होते, इनके लिए कोई सुविचारित एवं व्यावहारिक पाठ्यक्रम शायद ही कभी पाया जाता हो, इन्हें विद्यालयों की समय-सारणी में नहीं रखा जाता और उन संस्थानों में इनका अध्ययन नहीं होता जो सेवापूर्ण प्रशिक्षण देते हैं । इसका अर्थ यह है कि अधिकतर शिक्षकों में, उनके अपने शिक्षक-प्रशिक्षण के कारण और अपनी विद्यालयी शिक्षा के अनुभवों के कारण; इन गतिविधियों के लिए आवश्यक क्षमता ही नहीं होती। और वे इन गतिविधियों के लिए आवश्यक अभिप्रेरणा भी बच्चों को नहीं दे सकते ।

अगला कारण, वर्तमान शिक्षा केवल सूचना से सरोकार रखती है । बच्चे के पहली कक्षा में प्रवेश से लेकर, उसके विद्यार्थी बनने एवं स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने तक उसकी शिक्षा का पूरा बल असंबद्ध जानकारी के टुकड़े रटने पर ही रहता है, जो प्रथम अवसर मिलते ही शीघ्रता से भुला दिये जाते हैं । अमाप्य गतिविधियों के शिक्षण के लिए अलग प्रकार की शिक्षण-विधि एवं एक बच्चे के सीखने के प्रति एक भिन्न दृष्टिकोण की जरूरत होती है । बहुत ही कम शिक्षक इन विधियों एवं इस दृष्टिकोण को सीखने-समझने के लिए आवश्यक क्षमतावान है या समय देने को तैयार हैं ।

अंत में, इनका मूल्यांकन कठिन है और कई बार असंभव है। और क्योंकि सभी मूल्यांकन विशेषज्ञों की यह अभ्युक्ति है कि जो सीखा जाये उसका मूल्यांकन अवश्य हो, अत: ये गतिविधियां शैक्षणिक प्रक्रिया का हिस्सा कभी नहीं बनती ।

शिक्षाक्रम में इन की अनुपस्थिति के लिए इतने वजनी कारणों को देखते हुए पूछा जा सकता है कि आखिर इन गतिविधियों की उपयोगिता क्या है ? इनको महत्व दिये जाने के कई कारण हैं । इन कारणों का जिक्र मैं अलग-अलग अनुच्छेदों में करूंगा ।

1. ये गतिविधियां बच्चे के बौद्धिक विकास के लिए अत्यावश्यक है । आश्चर्य की बात यह है कि प्रत्येक शिक्षाशास्त्री, प्रत्येक शिक्षाविभाग और प्रत्येक शिक्षा आयोग सिद्धांत में इन गतिविधियों का समर्थन करता है । ऐसे बहुत से उदाहरणों में से एक कोठारी आयोग की 1986 की रिपोर्ट से यहां उद्धृत कर रहे हैं : ''खोज और अविष्कार को महत्वपूर्ण मानने वाले युग में सृजनात्मक

अभिव्यक्ति विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाती है । शिक्षा में कला की अवहेलना से शिक्षण-प्रक्रिया दरिद्र हो जाती है ।''

वर्तमान शिक्षा प्रणाली से अधिक दरिद्र कुछ नहीं हो सकता। मेरे विचार से शाला त्यागी बच्चों के त्रासद प्रतिशत (पांचवी तक 70 प्रतिशत) के मुख्य कारण आर्थिक नहीं बालक अभिप्रेरण एवं आनन्द की कमी है । स्कूल एक नीरस, दु:खदायी और अनुपयोगी गतिविधि है और यही कारण है कि बच्चे जैसे ही संभव होता है इसे छोड़ देते हैं ।

2. ये गतिविधियां उपयोगी हैं क्योंकि सामान्यत: इनका सरोकार समस्या समाधान से होता है और जानकारी देने से कुछ खास सरोकार नहीं होता । यह सही है कि चूंकि स्वयं शिक्षक को इस तरह की गतिविधियों में अपने विद्यालय या महाविद्यालय में भागीदारी का लाभ नहीं मिला होता है, अत: उसे इन में काम करवाना मुश्किल लगता है । इस कारण बहुत बार वह इन्हें सूचना देने वाले विषयों में परिणित कर देता है और इसी तरह उनका मूल्यांकन करता है । उदाहरण के लिए शिक्षक श्यामपट्ट पर एक फूल बना देगा और कला शिक्षण में बच्चों को अपनी कापी में उस की नकल करने को कह देगा । इस तरह बच्चों ने हूबहू नकल की या नहीं की इसके अनुसार उन्हें 10 में से कोई नम्बर देना संभव हो जाता है । यदि सब बच्चे भिन्न-भिन्न चीजें बनायेंगे तो उनका मूल्यांकन कैसे होगा ?

दुर्भाग्य से, आजकल बहुत ही कम विद्यालयी विषयों में बच्चों को समस्या समाधान संबंधी गतिविधियों में मशगूल होने की अनुमति मिल पाती है । आरंभिक कक्षाओं में बच्चे जो कुछ भी सीखते हैं वह सूचना भर होती है । उदाहरणार्थ, मातृभाषा शिक्षण में भी बच्चा पुस्तक को रट लेता है और उसे अपने वाक्य बनाने का या भाषा का इस प्रकार उपयोग करने का जिसमें समास्या समाधान लाजमी हो उसे कोई मौका नहीं मिलता । ऊपर वर्णित गतिविधियां बच्चे को समस्या समाधान का बहुत अभ्यास और अवसर प्रदान करती हैं, जो कि उसे अन्य विषयों में नहीं मिलता ।

3. इन गतिविधियों का एक और लाभ अवधारणा निर्माण के क्षेत्र में है । वर्तमान विद्यालयी पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों में अवधारणा बनाना लगभग पूरी तरह अनुपस्थित है । पर हस्तशिल्प, नाटक आदि गतिविधियों में बच्चों को कई अवसर मिलेंगे, जहां वे नई अवधारणायें सीख सकेंगे या उन अवधारणाओं को दोहरा सकेंगे जो पहले ठीक से नहीं सीखी गई हैं ।

4. विद्यालय में झांकने भर से ही यह स्पष्ट हो जायेगा कि पूरे दिन में एक सामान्य बच्चे को अपने निर्णय लेने का कोई अवसर नहीं मिलता । उसे कक्षामें क्या करना है, क्या पढ़ना है, कौन से सवाल करने हैं, क्या लिखना है और ये सब कब करना है - इस तरह के निर्णय उसके लिए पहले ही शिक्षक ने कर लिये है, उसे क्या पढ़ना है यह तो पाठ्यपुस्तक ने ही कर दिया है । उपरोक्त गतिविधियों का एक लाभ यह है कि यदि उन्हें ठीक से करवाया जाये तो इनमें बच्चों को अपने निर्णय करने के असंख्य अवसर मिलेंगे । साफ ही है कि निर्णय ले सकना जीवन के लिए एक महत्वपूर्ण क्षमता है और इतना ही साफ यह भी है कि अधिकांश विद्यालयों में इस क्षमता का दारूण अभाव है ।

अगला लाभ यह है कि ये गतिविधियां नितांत आनन्ददायक हैं । बच्चों को चीजें बनाने में मजा आता है, उन्हें गाना, नाचना, और नाटक बेहद पसंद होता है । बहुधा यही वे गतिविधियां होती हैं जिनके माध्यम से बच्चे को शिक्षा से सच्चा लगाव पैदा होता है और इन्हीं दक्षताओं के माध्यम से, तथा इन से मिलने वाले आनन्द के कारण; और वास्तव में तो इन में प्राप्त सफलता के कारण ही बच्चे को वह अभिप्रेरण मिलता है जो शिक्षण प्रक्रिया का निहायत ही जरूरी हिस्सा है ।

6. एक और लाभ इन गतिविधियों का यह है कि बच्चा जो भाषा, गणित एवं विज्ञान में सीखता है उसको हस्तशिल्प में किये गये काम से जोड़ने वाली महत्वपूर्ण कड़ी का काम ये गतिविधियां करती हैं । उदाहरणार्थ बच्चा गणित की पुस्तक के माध्यम से आधे और चौथाई का अंतर सीख सकता है, पर हस्तशिल्प की कक्षा में कागज को नापने आदि में इन गणितीय अवधारणाओं का अंतर स्पष्ट होता है । विभिन्न विषयों में संबंध स्थापित करने के अलावा ये गतिविधियां ध्यान केन्द्रण के तत्वों को भी बढ़ाती है, खासकर उन व्यक्तिनिष्ठ तत्वों को जिनमें मिजाज एवं आदतें शामिल हैं ।

7. एक और अत्याधिक महत्वपूर्ण लाभ यह है कि पदार्थ सामान्यत: वयस्क द्वारा कक्षा में लागू किये गये अनुशासन से भिन्न प्रकार का अनुशासन सिखाते हैं । गीली मिट्टी के साथ सही तरह का व्यवहार करना ही पड़ेगा, नहीं तो यह तिड़क जायेगी, टेढ़ी-मेढ़ी हो जायेगी । यह बच्चे के लिए एक नये प्रकार का अनुशासन है जो किसी वयस्क द्वारा नहीं बल्कि स्वयं सामग्री द्वारा लगाया गया है । जैसे जैसे बच्चा हस्तशिल्प की गतिविधियां करता जाता है वह पदार्थ द्वारा लगाये जाने वाले अनुशासन के प्रति सचेत होता जाता है । परिणाम स्वरूप वयस्कों द्वारा लगाये जाने वाले अनुशासन को अधिक समझदारी से ग्रहण करता है ।

8. इन सब लाभों के अलावा हमें सीखने के हस्तान्तरण को नहीं भूलना चाहिये । अब इस में कोई शक नहीं रह गया है कि किसी एक क्षेत्र में समस्या समाधान की गतिविधियां यदि अच्छी तरह सिखाई जायें तो इन से बच्चा अन्य क्षेत्रों में समाधान की क्षमता भी प्राप्त करता है ।

इस लेख के आरंभ में उल्लेखित दो बिंदुओं; विमर्श और नैतिकता पर किसी आगे आने वाले लेख में विचार करेंगे । ◆